SHRI RADHAMOHAN (POSTHUMOUS)

Shri Radhamohan, widely known as Prof. Radhamohan, retired as Principal, S.C.S. Autonomous college, Puri. Shri Radhamohan was the first State Information Commissioner of Odisha. He is known for his lifelong passion for conservation of natural resources, zeal for social reforms, communal harmony, non-violent action, simplicity and personal integrity. He was the founder of SAMBHAV, an issue-based organization working on the twin issues of environment and Gender.

2. Born on 30th January, 1943, Prof. Radhamohan did graduation with Honors in Economics from the Utkal University and Masters in Applied Economics from the same University in the year 1965. He taught economics in various Govt. colleges under different Universities of the state and also acted as senior scientist in the Dept. of Science, Technology and Environment, as Communication Expert in the Dept. of Rural Development, and Deputy Secretary in the Dept. of Education in the Secretariat of the State Govt. He briefly worked with Govt. of India looking after youth activities as Assistant Program Advisor.

3. Shri Radhamohan used Sundays, other holidays and vacations catalyzing community action for natural forest regularization, renewal and restoration of waterbodies, promotion of sanitation, communal amity, engaging youth in constructive activities and fighting against social ills. Provided valuable inputs to Govt. in formulating policies.

4. Shri Radhamohan founded SAMBHAV in the year 1989 and through it effectively demonstrated how with love and care a piece of hopelessly degraded land could recover and made productive without using a pinch of chemical pesticide or an ounce of chemical fertilizer. It also showed that agriculture in harmony with nature is the only long-term solution to the crisis affecting today's agriculture. SAMBHAV also showed the way how through true empowerment women could fight for justice and against various forms of violence without any mediation. It has become a preferred destination to learn about biodiversity conservation and ecological agriculture, in popular parlance, organic farming.

5. Shri Radhamohan is recipient of several awards chief of which are 'Global 500 Roll of Honor' by the UNEP, 'Utkal Seva Sanman' of the state Govt. and 'Prerana' for distinguished work in the field of Environment and Social service etc.

6. Shri Radhamohan passed away on 11th June, 2021.

श्री राधामोहन (मरणोपरान्त)

श्री राधामोहन नाम से लोकप्रिय श्री राधामोहन ओडिशा के पुरी स्थित एस.सी.एस. स्वायत्त महाविद्यालय के प्रधानाचार्य के रूप सेवानिवृत्त हुए। श्री राधामोहन ओडिशा राज्य के प्रथम राज्य सूचना आयुक्त थे। उन्हें प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण, समाज सुधारों के प्रति उत्साह, सांप्रदायिक सद्भाव, अहिंसा, सादगी और आत्मनिष्ठा के प्रति उनकी गहरी दिलचस्पी के लिए जाना जाता है। वह पर्यावरण और जेंडर जैसे विषयों पर कार्य पर रहे 'संभव' नामक संगठन के संस्थापक थे।

2. दिनांक 30 जनवरी, 1943 को जन्मे, प्रो. राधामोहन ने उत्कल विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र (ऑनर्स) में स्नातक और इसी विश्वविद्यालय से वर्ष 1965 में अनुप्रयुक्त अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने राज्य के अनेक विश्वविद्यालयों के राजकीय महाविद्यालयों में अर्थशास्त्र का अध्यापन कार्य किया है तथा विज्ञान, प्रौद्योगिकी और पर्यावरण विभाग में वरिष्ठ वैज्ञानिक, ग्रामीण विकास विभाग में संचार विशेषज्ञ और राज्य सरकार सचिवालय के शिक्षा विभाग में उपसचिव के रूप में कार्य किया। उन्होंने कुछ समय के लिए भारत सरकार में युवा मामलों के सहायक कार्यक्रम सलाहकार के रूप में भी सेवा की।

3. श्री राधामोहन ने छुट्टियों के दौरान प्राकृतिक वन नियंत्रण, जलाशयों का नवीकरण और जीर्णोद्धार, स्वच्छता को बढ़ावा देने, सांप्रदायिक सौहार्द, रचनात्मक गतिविधियों के साथ युवाओं को जोड़ने तथा सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध लड़ने के लिए सामुदायिक कार्य को समन्वित किया। उन्होंने नीतियां के निर्माण में सरकार को महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई।

4. श्री राधामोहन ने वर्ष 1989 में 'संभव' की स्थापना की और इसके जरिए दर्शाया कि बेहतर देखभाल से खराब या बंजर भूमि को कैसे ठीक किया जा सकता है और बिना कोई रासायनिक कीटनाशक या रासायनिक उर्वरक के इसे उपजाऊ बनाया जा सकता है। उन्होंने यह भी साबित किया कि प्रकृति के सामंजस्य में खेती करना वर्तमान कृषि संकट का एकमात्र स्थायी समाधान है। 'संभव' ने यह भी रास्ता दिखाया कि सच्चे अर्थों में सशक्तीकरण के द्वारा महिलाएं बिना किसी सहारे के न्याय के लिए और अनेक प्रकार की हिंसा के खिलाफ लड़ सकती हैं। यह जैव विविधता संरक्षण और पारिस्थितिकी कृषि, जिसे आम भाषा में ऑर्गेनिक खेती कहते हैं, सीखने के लिए एक पसंदीदा गंतव्य बन गया है।

5. श्री राधामोहन को अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए है, जिनमें यूएनईपी द्वारा प्रदान किया गया 'ग्लोबल 500 रोल ऑफ ऑनर', राज्य सरकार का 'उत्कल सेवा सम्मान' और पर्यावरण और समाज सेवा आदि के क्षेत्र में असाधारण कार्य के लिए 'प्रेरणा' नामक पुरस्कार प्रमुख हैं।

6. श्री राधामोहन का 11 जून, 2021 को देहावसान हो गया।

KUMARI SABARMATEE

Kumari Sabarmatee, popularly known as `Tiki apa' among people, is one of the cofounders of Sambhav, an organization founded in 1989, dedicated to environment and gender issues. People in Odisha and outside identify her with organic farming and biodiversity conservation.

2. Born on 16th February, 1968 in Odisha to parents Bijaylaxmi and Radhamohan, Kumari Sabarmatee completed her Master's degree in Rural Development from Gandhigram in Tamilnadu. She worked with Oxfam briefly. At the age of 25, she left the job, decided not to marry and came back to live and work voluntarily in Sambhav in 1993 to regenerate the wasted land ecologically and work with people and nature.

3. Kumari Sabarmatee, along with her small team, successfully experimented, demonstrated and shared the knowledge widely about how a barren and abandoned land can be regenerated ecologically, most precious resources like soil, water, biodiversity can be conserved, indigenous varieties can be productive organically and women and common people can be catalysts of this change. Once thought impossible (Asambhav) to achieve all these were made possible (Sambhav) through sustained dedicated efforts. Once completely barren, the place is housing more than 1000 plant varieties along with very rich animal diversity besides encouraging people to re-green their land too. She encouraged women-friendly technologies like System of Rice Intensification (SRI) besides growing 500 indigenous rice varieties in SRI and training farmers.

4. Kumari Sabarmatee's ideas of "Adopt a seed" and "Buy food, not disease" have inspired many people across the state and also the country to think about and practice biodiversity conservation and organic farming. She could create a farmer friendly environment to impart training tirelessly to thousands of people in various aspects of farming with gender sensitive approach.

5. Kumari Sabarmatee has been conferred with some of the prestigious awards like Nari Shakti Puraskar at national level and Living Legend Award, Shambhavi Puraskar, Prerana Award etc. at the state level for her lifelong contribution in the field of organic farming, women's development, environmental protection and biodiversity conservation.

कुमारी साबरमती

कुमारी साबरमती, जिन्हें लोग प्यार से 'टिकी आपा' बुलाते हैं, 1989 में स्थापित पर्यावरण और महिलाओं से संबंधित मुद्दों के लिए समर्पित संगठन 'संभव' की सह–संस्थापकों में से एक हैं। उन्हें ओडिशा में और ओडिशा के बाहर जैविक खेती और जैव विविधता संरक्षण कार्यों के लिए जाना जाता है।

2. ओड़िशा में श्रीमती बिजयलक्ष्मी और श्री राधामोहन के घर 16 फरवरी, 1968 को जन्मी, कुमारी साबरमती ने तमिलनाडु में गांधी ग्राम से ग्रामीण विकास में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की। उन्होंने कुछ समय के लिए ओक्सफैम के साथ काम किया। 25 वर्ष की आयु में, उन्होंने यह नौकरी छोड़ दी और विवाह न करने का संकल्प लिया। 1993 में वापस आकर बेकार भूमि को पर्यावरणीय रूप से पुनः उपयोग योग्य बनाने तथा लोगों और प्रकृति के साथ काम करने के लिए संभव में बने रहने तथा कार्य करने का निर्णय लिया।

3. कुमारी साबरमती ने, अपनी छोटी सी टीम के साथ, बंजर और परित्यक्त भूमि को पर्यावरणीय रूप से पुनः उपयोग योग्य बनाने, मृदा, जल, जैव विविधता जैसे अमूल्य संसाधनों के संरक्षण, देशीय किस्मों के जैविक उत्पादन और इस बदलाव में महिलाओं तथा आम लोगों की उत्प्रेरक की भूमिका के संबंध में सफल प्रयोग किए, उनका प्रदर्शन किया और इस जानकारी को व्यापक रूप से साझा किया। कभी असंभव माने जाने वाले ये सभी काम लगातार समर्पित प्रयासों से संभव हो गए। कभी पूरी तरह बंजर इस स्थान पर, आज समृद्ध पशु विविधता के साथ 1000 से अधिक पौधों किस्में हैं और यह लोगों को उनकी जमीनों को हरा–भरा बनाने के लिए प्रेरित कर रहा है। उन्होंने चावल सघनता प्रणाली (एसआरआई) जैसी महिला–अनुकूल प्रौद्योगिकियों को प्रोत्साहित किया और एसआरआई मेंचावल की 500 देशी किस्मों का उत्पादन किया तथा किसानों को इसमें प्रशिक्षित किया।

4. कुमारी साबरमती के "एडोप्ट ए सीड" और "खाना खरीदो, बीमारी नहीं" के विचारों ने पूरे राज्य और देश में भी लोगों को जैव विविधता संरक्षण और जैविक खेती पर विचार करने तथा उपयोग करने के लिए प्रेरित किया है। उन्होंने महिलाओं के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण के साथ खेती के विभिन्न पहलुओं पर हजारों लोगों को निरंतर प्रशिक्षण देने के लिए एक किसान अनुकूल वातावरण तैयार किया है।

5. कुमारी साबरमती को जैविक खेती, महिला विकास, पर्यावरण संरक्षण और जैव विविधता संरक्षण के क्षेत्रों में उनके आजीवन योगदान के लिए राष्ट्रीय स्तर पर नारी शक्ति पुरस्कार और राज्य स्तर पर लिविंग लीजेंड पुरस्कार, सांभवी पुरस्कार, प्रेरणा पुरस्कार आदि जैसे कई प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।